International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 23-06-2023, Accepted: 09-07-2023, Published: 24-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 29-33

भारतीय चिंतन में मानववाद की अवधारणा

डॉ. विवेक कुमार राय[1], प्रद्युम्न पाण्डेय[2]

[1] असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी. जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, ईश्वर शरण पी. जी. कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्राचीन ग्रीक या भारतीय दर्शन से लेकर वर्तमान चिंतन तक में मानववाद के तत्व कम या अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। भारतीय चिंतन में मानववाद की जड़े वेदों तक फैली हुई हैं। भारतीय चिंतन परम्परा में मानववाद को समझने के लिए इसे चार चरणों में विभाजित करके इसका अध्ययन किया जा सकता है। पहले चरण में वैदिक या उपनिषदीय मानववाद आता है। भारतीय मानववादी चिंतन का सबसे महत्वपूर्ण आधार वैदिक मानववाद ही है। इसी के तत्व कम या अधिक मात्रा में अन्य विचारकों में पाए जाते हैं। दूसरे चरण का मानववाद बौद्ध मानववाद है। इसे ईश्वररहित मानववाद भी कहते हैं। क्योंकि इसमें ईश्वर, आत्मा जैसे मुद्दों को अस्वीकार कर दिया गया है। तीसरा चरण चार्वाक या लोकायत मानववाद का है। यह भारतीय चिंतन परंपरा में इकलौता दर्शन है जो कि सम्पूर्ण भौतिकवाद पर आधारित है। इसे भौतिकवादी मानववाद भी कह सकते हैं। यह भी बौद्ध दर्शन की तरह ईश्वर और आत्मा के अस्तित्व में विश्वास नही करता। लेकिन बौद्ध दर्शन और इसमें मुख्य अंतर यह है कि बौद्ध दर्शन में नैतिकता पर जोर दिया गया है जबकि चार्वाक दर्शन नैतिकता को भी नकारता है। भारतीय मानववाद का चौथा चरण 19वीं शताब्दी के पुनर्जागरण काल के दौरान व उसके बाद का मानववादी चिंतन है। इसमें मुख्य रूप से राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, बाल गंगाधर तिलक, स्वामी विवेकानंद के विचार महत्वपूर्ण हैं। इसके अतिरिक्त एम एन रॉय का नव–मानववाद एवं पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद भी बहुत महत्वपूर्ण है।

मूल शब्द: मानववाद, भारतीय दर्शन, पुनर्जागरण, वेदांत, मानव

मानववाद अर्थ और इतिहास

मानव सभ्यता के शुरुआत से ही मनुष्य ने अपने जीवन–स्तर को बेहतर करने के लिए तरह तरह के प्रयास किये हैं। प्रत्येक उस विचार–प्रणाली में जो मनुष्य को केंद्र में रखता है मानववाद के तत्व पाए जाते हैं। मानववाद का एकमात्र उद्देश्य मनुष्य के जीवन को बेहतर बनाना है। यह मनुष्य के विवेक, शक्ति, गरिमा, प्रतिष्ठा और रचनात्मकता में विश्वास करता है तथा उसे अपने जीवन का निर्णायक स्वयं बनने के लिये प्रेरित करता है। मानववाद सिर्फ एक साध्य नही है बल्कि यह एक जीवन–पद्धति भी है। यह जीवन को एक नए दृष्टिकोण से देखने का मार्ग प्रशस्त करता है। यह अस्तित्व व घटनाओं को मानवीय परिप्रेक्ष्य मे व्याख्यायित करता है

ह्यूमनिस्ट शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग 16वीं शताब्दी के प्रारंभ में यूरोपीय पुनर्जागरण के दौरान उन लेखकों और बुद्धिजीवियों के लिए किया जाता था जिन्होंने कैथोलिक चर्च की सत्ता तथा ज्ञान पर धार्मिक बंधन के खिलाफ विद्रोह किया। यूरोपीय पुनर्जागरण द्वारा विश्वास के स्थान पर विवेक का प्रयोग किए जाने पर जोर दिया गया। लेकिन मानववाद के जड़े भारत में वेदों तक, चीन में लाओ त्से और कन्फ्यूशियस तक तथा पश्चिम में ग्रीक फिलासफी तक फैली हुई है। ग्रीक फिलॉस्फर प्रोटागोरस का कथन 'मनुष्य ही सभी चीजों की माप है' मानववाद का सटीक अर्थ बतलाता है। ग्रीक में मानववाद सीमित अर्थ में प्रयुक्त होता था उसमें सिर्फ नागरिकों के लिए ही बेहतर जीवन का विकल्प सुझाया गया था। अरस्तु ने दासों, औरतों, बूढ़ों व बच्चों को नागरिकता से वंचित कर रखा था तथा दासत्व को एक प्राकृतिक स्थिति बताया। इस संबंध में ग्रीक दर्शन के तहत मानववाद की कुछ सीमाएं थी।

इसके पश्चात पश्चिम में मध्यकाल के दौरान मानववाद संबंधी विचारों में विशेष प्रगति नहीं हुई। इस काल के दौरान मनुष्य को चर्च के अधीन रखा गया। उसके विवेक व तर्क को आस्था के अधीन कर दिया गया था। लोगों को विचार व दर्शन के क्षेत्र में कोई स्वतंत्रता नहीं थी। सामाजिक व राजनीतिक जीवन में चर्च ही संप्रभु हो गया था। ऐसी स्थिति में सभी तरह से स्वतंत्रता की आवश्यकता महसूस की गई, जिसके परिणामस्वरूप 14वीं शताब्दी में इटली से पुनर्जागरण आंदोलन की शुरुआत हुई जिसने धीरे–धीरे पूरे यूरोप में पैर जमा लिए। वैज्ञानिक खोज व ज्ञानोदय ने पुनर्जागरण के आधार के रूप में काम किया। इस दौरान मनुष्य को चर्च से मुक्ति दिलाने का प्रयास किया गया तथा वैज्ञानिक खोजों ने मनुष्य को अपने विवेक पर भरोसा करने के लिए प्रेरित किया तथा उद्घोषणा की कि मनुष्य पराभौतिक शक्तियों के अधीन रहे बिना भी धरती पर सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है। पुनर्जागरण मानववाद का सबसे मुख्य मुद्दा था–आस्था की जगह मनुष्य के विवेक पर बल।

पुनर्जागरण आंदोलन से लेकर अब तक मानववाद ने कई उतार–चढ़ाव देखे तथा अपने आज के स्वरूप में पहुंचने तक उसने कई विचारधाराओं के तत्वों को ग्रहण किया। आज समकालीन मानववाद को वैज्ञानिक मानववाद प्राकृतिक मानववाद या भौतिकतावादी मानववाद कहा जाता है। इसके अतिरिक्त मानववाद के अन्य रूप भी पाए जाते हैं; धार्मिक मानववाद, अस्तित्ववादी मानववाद, लोकतांत्रिक मानववाद, आध्यात्मिक मानववाद आदि।

मानववाद स्वयं में कोई अलग विचारधारा नहीं है बल्कि सभी प्रचलित विचारधाराओं में मानववाद के तत्व कम या अधिक मात्रा में खोजे जा सकते हैं फिर चाहे वह उदारवाद में मनुष्य के विवेक पर विश्वास हो या फिर समाजवाद में विशेषाधिकार का अंत हो, अस्तित्ववाद द्वारा मनुष्य को अपने भाग्य का निर्माता बनाना हो या फिर मार्क्सवाद द्वारा मनुष्य के लिए अलगाव से मुक्ति का सिद्धांत हो, ये सभी मानववाद के तत्वों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन करते हैं।

भारतीय चिंतन में मानववाद

भारतीय चिंतन परंपरा में मानववाद कोई नई विचारधारा नहीं है। मानववाद की जड़े वेदों और उपनिषदों तक फैली हुई है। भारतीय चिंतन में शुरुआत से ही मानव की महानता को स्वीकार करके उसे एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया गया है। उपनिषदों का महावाक्य अहं ब्रह्मास्मि और तत्वमसि मानववादी विचारधारा का ही प्रचंड जयघोष है। पश्चिम के विपरीत भारतीय मानववादी चिंतन एक व्यापक क्षेत्र को समाहित करता है। चिंतन की इस परंपरा में प्रतिपादित मानव जीवन के चार पुरुषार्थों– धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का वास्तविक लक्ष्य मनुष्य को उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए एक पूर्ण स्वरूप प्रदान करना है। लेकिन पश्चिमी मानववादी चिंतन में उपरोक्त पुरुषार्थ में से सिर्फ अर्थ और काम को ही विशेष महत्व प्रदान किया गया है, धर्म और मोक्ष को छोड़ दिया गया है। यही कारण है कि यूरोप में थर्टी ईयर क्राइसिस के अतिरिक्त दो महायुद्धो ने अपनी विभीषिका दिखाई है। धर्म और मोक्ष की अपेक्षा सिर्फ अर्थ और काम को ही अधिक तरजीह देने का परिणाम हुआ कि मानव जीवन में सामंजस्य स्थापित करना असंभव हो गया जिसका परिणाम हम सभी के सामने है। भारतीय मानववादी चिंतन का लक्ष्य है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी को समान महत्व देना, जिसके फलस्वरूप इंसान धर्म के मार्ग पर चलते हुए अर्थ और काम की प्राप्त करें ताकि सभी सांसारिक बंधनों से मुक्ति मिले जो कि पुरुषार्थों में सबसे अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण है।

धर्म + अर्थ + काम + मोक्ष = भारतीय मानववाद

अर्थ + काम = पश्चिमी मानववाद

भारतीय मानववाद = पश्चिमी मानववाद + { धर्म + मोक्ष }

मानववाद का सबसे प्रमुख लक्ष्य मनुष्य को उसकी वर्तमान अवस्था से अधिक उन्नत अवस्था की ओर ले जाना है। भारतीय चिंतन में मोक्ष की अवस्था को पूर्ण अवस्था कहा जाता है। यानी मनुष्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य स्वतंत्रता की प्राप्ति है। स्वतंत्रता की यह अवधारणा स्वतंत्रता की पश्चिमी अवधारणा से नितांत भिन्न है। स्वतंत्रता की भारतीय अवधारणा में भौतिक स्वतंत्रता के साथ–साथ मानसिक व आध्यात्मिक स्वतंत्रता भी शामिल है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार मानव जीवन का सबसे अंतिम एवं महत्वपूर्ण लक्ष्य स्वतंत्रता की प्राप्ति ही है इसलिए यह पूरा विश्व स्वतंत्रता अथवा मुक्ति के लिए ही कार्य कर रहा है। एक छोटे से परमाणु से लेकर सर्वोच्च प्राणी तक सभी, जानबूझकर या फिर अनजाने में ही, सिर्फ एक ही लक्ष्य एक ही उद्देश्य के लिए कार्य कर रहे हैं और वह है– मुक्ति अर्थात स्वतंत्रता। अनेक पश्चिमी लेखकों ने स्वतंत्रता अर्थात मुक्ति की इस भारतीय अवधारणा की आलोचना की है क्योंकि उन्होंने मुक्ति की इस अवधारणा को इस जीवन से मुक्ति अर्थात मृत्यु के उपरांत स्वतंत्रता तक ही सीमित कर दिया है जो कि एक बहुत बड़ी भूल और नासमझी है। दरअसल भारतीय चिंतन में मुक्ति अथवा मोक्ष का अर्थ किसी दूसरी दुनिया अथवा लोक में चले जाना नहीं होता है और न ही शरीर त्याग को ही मुक्ति कहा जाता है बल्कि भारतीय चिंतन परंपरा में मोक्ष या मुक्ति का मतलब है– मानव का भौतिक व अपरा प्रकृति के बंधनों से मुक्त हो जाना। मानव द्वारा खुद के संबंध में यह ज्ञान होना, कि वह सदा से स्वतंत्र और सनातन है, ही मुक्ति है। इससे ही मिलते–जुलते विचार अस्तित्ववाद विचारक सार्त्र के भी हैं। वे कहते हैं कि मनुष्य होना और स्वतंत्र होना दो अलग चीजें नहीं है। स्वतंत्रता ही आदमी की आदमीयत को संभव बनाती है। भारतीय चिंतन मानता है कि अपने स्वभाव से ही मनुष्य स्वतंत्र है, वह इस भौतिक प्रकृति के संपर्क में आ जाने से खुद को क्रोध, मोह, लोभ जैसे बंधनों में बंधा हुआ पता है। इस बंधन से मुक्त होने का एक ही मार्ग है– खुद का अर्थात स्व का ज्ञान होना। आत्मज्ञान ही मानववाद की तरफ पहली सीढ़ी है। क्योंकि स्व के ज्ञान से ही इस सत्य का ज्ञान होता है कि मनुष्य स्वभावतः स्वतंत्र है यानी मनुष्य के क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार जैसे बन्धन समाप्त हो जाते हैं। ऐसी स्थिति मनुष्य के अंदर त्याग की भावना उत्पन्न करती है जो न्याय और समानता को आधार बनाकर मानव कल्याण को ही अपना एकमात्र लक्ष्य बनाती है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि सत्य का ज्ञान होने पर दया सेवा में बदल जाता है। इसी को आधार बनाकर उन्होंने दरिद्रनारायण की अवधारणा प्रतिपादित की थी और नर सेवा को ही असली नारायण सेवा बतलाया था और इसी अवधारणा को आगे चलकर महात्मा गांधी ने हरिजन की अवधारणा में तब्दील कर दिया।

मोटे तौर पर भारतीय चिंतन में मानववाद का अध्ययन चार प्रमुख चरणों में किया जा सकता है। इन्ही चरणों से होते हुए मानववादी चिंतन ने भारत में वर्तमान स्वरूप ग्रहण किया है।

1. वैदिक–उपनिषदीय मानववाद
2. बौद्ध मानववाद
3. चार्वाक अथवा भौतिकतावादी मानववाद
4. 19वीं सदी के पुनर्जागरण काल के दौरान और उसके पश्चात का मानववाद

वैदिक–उपनिषदीय मानववाद

पश्चिम के भौतिकतावादी मानववाद के विपरीत भारतीय मानववाद का आधार आध्यात्मिक है। भारतीय चिंतन पद्धति में सिर्फ चार्वाक अथवा लोकायत ही इकलौता ऐसा दर्शन है जिसने भौतिकतावाद को ही अपने चिंतन का आधार बनाया। भारतीय चिंतन परंपरा में मानववाद की जड़े निश्चित रूप से वेदों तक फैली हुई है। वेदों को मानव इतिहास का सर्वप्रथम साहित्य होने का गौरव प्राप्त है। स्वामी विवेकानंद के अनुसार, ष्वेद का आशय किसी पुस्तक से नहीं है। इसका अर्थ है– अलग–अलग समय में अलग–अलग व्यक्तियों द्वारा खोजे गए आध्यात्मिक नियमों का संचित खजाना। यह ठीक वैसे ही है, जैसे गुरुत्वाकर्षण का नियम जो कि इसकी खोज से पहले भी अस्तित्व में था और यदि सारी मानवता इसे भूल भी जाती है तो भी यह अस्तित्व में रहेगा।

वेदों के सूक्तों में मानववाद के तत्व स्पष्ट रूप से समाहित हैं। उदाहरण के रूप में हम ऋग्वेद संहिता में वर्णित नासदीय सूक्त को लेते है।

तब न अनस्तित्व था न अस्तित्व
तब न अंतराल था न आकाश
तब क्या था? कहाँ था? किसके सहारे था?
क्या तब जल था, अथाह और अपरिमित?
३कौन सचमुच जनता है? कौन बता सकता है?
यह सब कब हुआ? सृजन कैसे हुआ?
ईश्वर बाद में आये, सृजन पहले हुआ
अतः कौन जानता है सृजन कैसे हुआ?
३कौन जानता है सृजन कब आरम्भ हुआ?
उसने इसे रचा या उसने नही रचा
सर्वोच्च स्वर्ग से सबकुछ देखने वाला
वह जानता है, या शायद वह भी नही जानता है।
––––––ऋग्वेद X-129

उपरोक्त सूक्त की प्रत्येक लाइन प्रश्न, तर्क और जिज्ञासा से परिपूर्ण है। मनुष्य जिज्ञासा करता है कि इसके पहले क्या था! और जो भी था वह कहां था! और किसके सहारे था.! वह तर्क करता है कि यह सृजन कैसे हुआ! पहले ईश्वर आये या पहले सृजन हुआ! वह स्थापित विश्वास को चुनौती देते हुए भगवान के अस्तित्व पर भी प्रश्नचिन्ह लगाता है कि सर्वोच्च स्वर्ग से सब कुछ देखने वाला, वह जानता है या शायद वह भी नहीं जानता।

विश्वास और आस्था की जगह मनुष्य के विवेक और तर्क पर बल दिया गया है जो कि मानववाद का सबसे मूल तत्व है। इसी तरह का मानववादी चिंतन सम्पूर्ण वेद में समाहित है जिसका सर्वोत्तम प्रकटीकरण उपनिषदों में हुआ है। उपनिषदों में वेदों का निचोड़ है। इनमें मानव जीवन मे दुःख और बन्धन का मुख्य कारण अज्ञानता को माना गया है जोकि आत्मज्ञान के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है। यह श्सा विद्या या विमुक्तयेश की धारणा पर बल देता है। वैदिक साहित्य मानवीय भलाई के लिए सबसे अधिक जोर ज्ञान पर ही देता है और कहता है कि यह ज्ञान कहीं से भी मिले उसे ग्रहण करना चाहिए। (आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विस्वतः)

उपनिषद, ब्रह्मसूत्र और भगवद्गीता के सम्मिलित रुप को वेदांत कहा जाता है। श्मानव–निर्माणश और श्बहुत्व में एकत्वश वेदांत दर्शन के दो सबसे महत्वपूर्ण केंद्रीय विषय हैं। वेदांत कहता है कि जहाँ कहीं भी दो हैं, वहीं भय है, खतरा है, वही द्वंद्व और संघर्ष है। जब एक ही है – वही तुम हो और तुम ही वह हो– तो किससे घृणा.? किससे संघर्ष.? जब सबकुछ एक ही है तो तुम किससे लड़ोगे.? इसीलिए ईशोपनिषद के छठें श्लोक में बहुत ही गहरी बात कही गयी है–

ष्यस्तु सर्वाणि भूतान्यात्मन्येवानुपश्यति।
सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विजुगुप्सते।।

अर्थात वह जो सबको खुद में और खुद को सब मे देखता है उसके अंदर फिर किसी के प्रति किसी भी प्रकार के घृणा का भाव नही रह जाता। उपनिषद का यह श्लोक सही अर्थों में जाति, धर्म, लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार के ऊंच–नीच के भेदभाव का खंडन करता है तथा यह न सिर्फ मनुष्य–मनुष्य के मध्य अपितु मनुष्य और ईश्वर के मध्य भी समानता की बात करता है। इसी महावाक्य के आधार पर स्वामी विवेकानंद जी ने श्नर सेवा को ही असली नारायण सेवाश कहा है। स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि यह नही हो सकता कि कोई खुद को वेदांती कहता हो और साथ ही किसी भी प्रकार का विशेषाधिकार–मानसिक, शारीरिक या आध्यात्मिक, स्वीकार करता हो क्योंकि वेदांत दर्शन किसी भी प्रकार के विशेषाधिकार के विरुद्ध है। यही विचार–तत्व भारतीय और विशेषरूप से वैदिक–उपनिषदीय मानववाद का आधार है। वेदांत कहता है कि आपको अपने उत्कर्ष के लिए आकाश में बैठे किसी अज्ञात देवता की तरफ नही देखना है क्योंकि आप अपने भाग्य के निर्माता एवं नियंता स्वयं हैं। आप स्वयं ईश्वर हैं। उपनिषद के महावाक्य श्अहं ब्रह्मास्मिश का मूलमंत्र यही है। अभी तक ज्ञात किसी भी चिंतन परंपरा में मानववाद का इससे बड़ा और इसे प्रचंड जयघोष हो ही नही सकता।

पश्चिमी चिंतन मानव–कल्याण की बात तो करता है लेकिन वह यह बताने में असमर्थ रहा है कि हमें दुसरों के प्रति अच्छा व्यवहार क्यों प्रदर्शित करना चाहिए, हमे क्यों मानवमात्र के साथ प्रेम–पूर्वक रहना चाहिए। इसका उत्तर सिर्फ वेदांत दर्शन का अद्वैतावादी चिंतन ही देता है जो कहता है कि दो है ही नही, सबकुछ एक है और वही ब्रह्म है। यह सबकुछ ब्रह्म है(सर्वं खल्विदं ब्रह्म), तुम भी ब्रह्म हो(तत्वमसि) और मैं भी ब्रह्म ही हूँ (अहं ब्रह्मास्मि)। सबकुछ एक ही है बस लोग उसे अलग–अलग नाम व रूप द्वारा जानते है (एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति) इसीलिए आपके द्वारा दूसरों के प्रति प्रदर्शित किया गया व्यवहार आपके स्वयं के प्रति ही होता है

बौद्ध मानववाद

भारत की भूमि पर ईसा पूर्व छठवीं शताब्दी में गौतम बुद्ध का जन्म हुआ। उन्होंने हिंदू धर्म में समय के साथ उत्पन्न कुछ कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। उनके विचारों को बौद्ध–दर्शन के रूप में जाना जाता है। बौद्ध–दर्शन मुख्य रूप से चार आर्य–सत्यों पर आधारित हैः 1. दुःख है 2. दुःख का कारण है 3. दुःख का निवारण है 4. दुःख के निवारण का मार्ग है।

बुद्ध मानते हैं कि यह सम्पूर्ण संसार दुः ख से भरा हुआ है। वेदांत दर्शन की भांति वे भी इस दुः ख का कारण अविद्या को ही मानते हैं। उनका कहना है कि इस संसार में कुछ भी सदैव के लिए नहीं है। सिर्फ अविद्या के कारण हम इस संसार को ही सत्य मानने लगते हैं जबकि कोई भी निरपेक्ष सत्य नहीं है। इसलिए अविद्या के हट जाने पर हम जीवन और मृत्यु के बंधन से मुक्ति पा जाएंगे। बुद्ध ने मनुष्य को अष्टांगिक मार्ग के अनुरूप जीवन जीने को कहा, जो हैः 1.सम्यक दृष्टि 2.सम्यक संकल्प 3. सम्यक वाक् 4.सम्यक कर्म 5.सम्यक ज्ञान 6.सम्यक व्यायाम 7. सम्यक स्मृति 8.सम्यक समाधि।

बौद्ध–मानववाद को ईश्वर–रहित मानववाद कहा जा सकता है क्योंकि यह ईश्वर और आत्मा में अविश्वास प्रकट करता है। यह मानता है कि कोई भी सत्य निरपेक्ष नहीं है। बुद्ध कहते हैं कि किसी चीज पर इसलिए विश्वास मत करो कि किसी बहुत पुरानी किताब में ऐसा कहा गया है, न ही इसलिए विश्वास करो क्योंकि आपके पिता ऐसा चाहते हैं और इसलिए भी विश्वास मत करो कि सब लोग ऐसा कहते हैं बल्कि तुम किसी भी चीज को पहले जांच करो, अनुभव करो और फिर उसके बाद विश्वास करो। और यदि तुम इसे अन्य लोगों के कल्याण योग्य पाते हो तो इसे उन लोगों तक भी पहुंचाओ। बुद्ध ने समानता का न सिर्फ संदेश दिया बल्कि उसे अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में व्यवहार में भी प्रदर्शित किया। प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने अपनी बायोग्राफी में कहा है कि वह कोई धार्मिक आदमी नहीं था लेकिन यदि वह होता तो वह बौद्ध होता।

चार्वाक या लोकायत मानववाद

चार्वाक दर्शन भारतीय विचार–चिंतन में भौतिकतावादियों में अग्रणीय है। चार्वाक दर्शन पूर्ण भौतिकवादी दर्शन है। यह आत्म को शरीर से सम्बद्ध मानता है जो कि जैन और बौद्ध दर्शन सहित अन्य सभी भारतीय दार्शनिक प्रणालियों का अपवाद है। सदानंद के वेदांतसार के अनुसार सामान्यतः चार्वाक दर्शन को चार प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता हैः

1. जो आत्म को शरीर से सम्बद्ध मानता है
2. जो इसे इंद्रियों से सम्बद्ध मानता है
3. जो इसे प्राण–शक्ति से सम्बद्ध मानता है
4. जो आत्म को मन से सम्बद्ध मानता है।

चार्वाक दर्शन पश्चिमी मानववाद की तरह ही चार पुरुषार्थ में से केवल दो पुरुषार्थों–अर्थ और काम पर जोर देता है। यह कहता है कि मनुष्य को सिर्फ इसी जीवन में सुख की प्राप्ति पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए क्योंकि इसके अलावा किसी दूसरे जीवन के अस्तित्व का प्रमाण नहीं है। चार्वाक दर्शन आत्मा, मोक्ष, परमात्मा व पुनर्जन्म जैसी तमाम अवधारणाओं को नकारता है। यह वेदों की सत्ता के साथ–साथ ही बौद्ध और जैन दर्शन के नैतिकतावाद की भी आलोचना करता है। यह मानता है कि भौतिक सुख ही जीवन का अंतिम उद्देश्य है और इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हमें उधार भी लेना पड़े तो भी संकोच नहीं करना चाहिए। (ऋणंकृत्वा घृतंपिबेंत। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनंकुतेः)

इस तरह हम देख सकते हैं कि उपयोगितावाद और सुखवाद का जो सिद्धांत बेंथम ने इंग्लैंड में दिया है उसकी स्थापना बेंथम से लगभग हजारों वर्ष पूर्व ही चार्वाक ने भारत में कर दी थी।

19वीं सदी के भारतीय पुनर्जागरण काल के दौरान व उसके बाद का मानववाद

19वीं शताब्दी भारतीय इतिहास में मध्यकाल और आधुनिक काल के बीच एक संक्रमण का दौर था। इस समय भारत की राजनीतिक संस्कृति में तीन महत्वपूर्ण परिवर्तन देखे जा सकते थे।

पहला परिवर्तन था भारत मे ब्रिटिश हुकूमत द्वारा यूरोपीय संस्कृति का आरोपण। ब्रिटिश हुकूमत अंग्रेजी विद्वतजनों द्वारा भारतीय जनता के मस्तिष्क में यह विचार डालने का प्रयास कर रही थी कि भारतीय लोग प्रत्येक क्षेत्र में अंग्रेजों से निम्न स्थिति के हैं और ब्रिटिश भारत में भारतीयों की स्थिति सुधारने के लिए ही आए हैं और इसके लिए कई आयोग व समितियां गठित की गईं, अनेको योजनाएं बनाई गईं तथा इंग्लैंड से बहुत सारे बौद्धिक लोग भारत भेजे गए।

दूसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन था भारतीय समाज–सुधारकों द्वारा भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के बीच सामंजस्य का प्रयास करना। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, केशवचंद्र सेन, रविंद्रनाथ टैगोर जैसे सुधारक अग्रपंक्ति में थे। ये लोग भारत के लिए अंग्रेजी शिक्षा को बहुत ही आवश्यक मानते थे। इनका मानना था कि भारतीयों की स्थिति में सुधार केवल अंग्रेजी शासन की मदद से ही किया जा सकता है। राजा राममोहन राय ने विलियम बेंटिक की मदद से भारत में सती–प्रथा पर प्रतिबंध लगाया। इन्होंने बाल–विवाह का विरोध तथा विधवा–पुनर्विवाह का पुरजोर समर्थन किया। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने भी स्त्रियों की स्थिति में सुधार के लिए अनेको प्रयास किये। उन्होंने स्त्री–शिक्षा पर विशेष जोर दिया। इन्होंने भी बाल–विवाह का विरोध तथा विधवा–पुनर्विवाह का समर्थन किया व इसका प्रचार–प्रसार किया।

तीसरा महत्वपूर्ण परिवर्तन था प्राचीन भारतीय संस्कृति का पुनरुत्थान। इसमें स्वामी दयानंद सरस्वती, बाल गंगाधर तिलक, स्वामी विवेकानंद, श्री अरबिंदो व महात्मा गांधी जैसे मनीषियों के विचारों व कार्यों को शामिल किया जा सकता है। इन्होंने हिंदू धर्म में उत्पन्न कुरीतियों को दूर करने का भागीरथ प्रयास किया। इनका मानना था कि भारत अपनी स्थिति में सुधार अपनी प्राचीन गौरवमयी स्थिति को प्राप्त करके ही कर सकता है। स्वामी दयानंद ने वेदों की ओर लौटने का नारा दिया तथा छुआछूत, व भेदभाव आदि कुरीतियों का बलपूर्वक विरोध किया। बाल गंगाधर तिलक राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को आधार बनाना चाहते थे इसके लिए उन्होंने महाराष्ट्र में गणपति उत्सव व शिवाजी उत्सव पुनः प्रारंभ करवाया।वे भारतीयों के मध्य भेदभाव के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने कहा है कि यदि छुआछूत ईश्वर का आदेश है तो मैं ऐसे ईश्वर को नहीं मानता। स्वामी विवेकानंद ने भारत के साथ–साथ विदेशों में भी वेदांत का प्रचार–प्रसार किया। वे अद्वैत वेदांत के इस वाक्य में विश्वास करते हैं कि मानव अपने मूल रूप में स्वतंत्र व सनातन है, अविद्या के कारण वह खुद को बंधन में जकड़ा हुआ पाता है। विवेकानंद के अनुसार मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण तथा अंतिम लक्ष्य स्वतंत्रता की प्राप्ति है। वे कहते हैं कि संपूर्ण ब्रह्मांड स्वतंत्रता के लिए ही कार्य कर रहा है, एक छोटे से नाभिक से लेकर एक विशाल जीव तक सभी एक ही लक्ष्य, एक ही उद्देश्य के पीछे लगे हुए हैं वह है– मुक्ति अर्थात स्वतंत्रता। विवेकानंद सिर्फ आध्यात्मिक स्वतंत्रता की ही बात नहीं करते हैं बल्कि वे मानसिक व भौतिक स्वतंत्रता को भी मनुष्य के उत्थान के लिए अति आवश्यक मानते हैं। उनका मानना है कि आध्यात्मिक स्वतंत्रता का मार्ग भौतिक स्वतंत्रता से ही होकर जाएगा क्योंकि जो लोग भौतिक जरूरतों रोटी कपड़ा और मकान जैसे संकटों से जूझ रहे हैं उनके लिए आध्यात्मिक स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं है। इसलिए उन्होंने दरिद्र नारायण की अवधारणा प्रस्तुत की और नर सेवा को ही असली नारायण सेवा कहा। इसी अवधारणा को बाद में महात्मा गांधी ने हरिजन–सेवा के नाम से लोकप्रिय बनाया। विवेकानंद का मानना है कि वेदांत का सार है– शक्ति और इसी शक्ति को वे भारतवर्ष के प्रत्येक मनुष्य के अंदर स्थिर कर देना चाहते हैं। उनका एकमात्र उद्देश्य है मानव को उसकी शक्तियों का एहसास कराना। उन्होंने स्वीकार भी किया है कि मानव–निर्माण ही मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। विवेकानंद ने मानव केंद्रित वेदांत मानववाद का प्रचार किया और इसे अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। उन्होंने इसके लिए रामकृष्ण मिशन की स्थापना की जिसका ध्येय वाक्य है– खुद की मुक्ति के लिए और संसार के कल्याण के लिए।(आत्मनोमोक्षार्थंजगदृ हिताय च)।

एम. एन. रॉय का नव–मानववाद

एम.एन. रॉय भारत में ईश्वररहित मानववाद के प्रबल समर्थक हैं। उन्होने अपने मानववाद को वैज्ञानिक मानववाद या नव–मानववाद की संज्ञा दी है। रॉय मनुष्य की स्वतंत्रता के प्रबल समर्थक थे। वे व्यक्ति की स्वतंत्रता पर राजनीतिक, आर्थिक अथवा आध्यात्मिक किसी भी प्रकार के नियंत्रण के विरोधी थे। मानवेंद्र नाथ राय के अनुसार सभी प्रचलित विचारधाराएं और व्यवस्थाएं मनुष्य की स्वतंत्रता के चरम उद्देश्य को अपने प्रक्रिया में भुला ही नहीं देती बल्कि अक्सर स्वयं उसके विरुद्ध हो जाती हैं। इसलिए एम.एन. रॉय एक ऐसे राजनीतिक तंत्र और अर्थव्यवस्था का प्रस्ताव करते हैं जिसमें सत्ता के किसी भी रूप का हस्तांतरण और केंद्रीकरण न हो सके और व्यक्ति अपनी संप्रभुता का वास्तविक भोग कर सके।

एम.एन. रॉय अपने नव–मानववाद सिद्धांत का निर्माण करते वक्त सर्वप्रथम प्रचलित तत्काल विचारधाराओं की कमियों की ओर ध्यान दिलाते हुए उनकी सारगर्भित आलोचना करते हैं। वे कहते हैं कि अपने मानववादी परंपरा के प्रति सच्ची निष्ठा के कारण उदारवाद ने व्यक्ति की स्वतंत्रता की उद्घोषणा की, लेकिन अहस्तक्षेप के आर्थिक सिद्धांत ने, अपने राजनीतिक उपसिद्धान्त के साथ, व्यक्ति को गलाकाट प्रतिस्पर्धा के बीहड़ में एक असहाय अवस्था में ला दिया। उदारवाद के अतिरिक्त एम.एन. रॉय साम्यवाद व मार्क्सवाद विचारधारा की भी कमियों को प्रकाशित करते हुए उसे मानव कल्याण के लिए अपर्याप्त बताते हैं। वे कहते हैं कि हमें बुराई की जड़ पर ही प्रहार करना होगा। नए समाज–दर्शन का आरंभ मानव प्रकृति की ऐसी अवधारणा से होगा जिससे मनुष्य के अपने में विश्वास करने की आशा पुनर्जीवित हो सके। उनका मानना है कि मनुष्य एक विचारशील प्राणी के रूप में अपनी दुनिया का निर्माता स्वयं है, उसे अपने से बड़ी किसी अन्य शक्ति में विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म–मानववाद

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद वैदिके–उपनिषदीय मानववाद पर ही आधारित है। उन्होंने अपने एकात्म मानववाद के इन सिद्धांतों को पहली बार जून 1964 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक शिक्षा वर्ग में विस्तार से समझाया था। उन्होंने कहा कि पश्चिम में दो प्रमुख विचारधाराएं हैं– पहला पूंजीवाद, जिसका नेतृत्व संयुक्त राज्य अमेरिका के हाथ में है और दूसरी विचारधारा साम्यवाद है जो यू.एस.एस.आर, चीन और पूर्वी यूरोप के कुछ अन्य देशों में सबसे लोकप्रिय है। उन्होंने कहा हम न तो पूंजीवाद में विश्वास करते हैं और न ही साम्यवाद में, हम एकात्म मानववाद में विश्वास रखते हैं। वह आगे कहते हैं कि पश्चिम की कई विचारधाराएं इस धारणा पर आधारित है कि मानव और समाज के बीच अंतर्निहित संघर्ष है लेकिन भारतीय दर्शन में दोनों संस्थाओं के बीच ऐसा कोई अंतर्निहित संघर्ष नहीं है। दृश्य इकाई व्यक्ति भी अदृश्य समाज का प्रतिनिधि है, उसके माध्यम से ही समाज प्रकट होता है। वास्तव में वह समाज का

प्रमुख साधन और उसकी पूर्ति का मापक है। दीनदयाल जी ने कहा कि भारतीय विचार परंपरा जिसमें गांधीजी भी शामिल हैं, व्यक्ति और समाज को विभाजित नहीं करते हैं और न ही यह व्यक्ति को केवल एक भौतिक प्राणी के रूप में मान्यता देता है। मनुष्य न केवल समाज में एकीकृत है बल्कि वह इस संसार या प्रकृति का एक अभिन्न अंग भी है और उसका न केवल शारीरिक पहलू है, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक पहलू भी है और इन सभी पहलुओं को एक समान महत्व दिया जाना चाहिए।

उनके एकात्म मानववाद का लक्ष्य व्यक्ति की सर्वांगीण प्रगति है। क्योंकि एक व्यक्ति शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समुच्चय है। इसलिए भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रगति आवश्यक है। व्यक्ति को हमारे प्रणाली में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होना चाहिए। श्यद पिंडे तद ब्रम्हांडेश के अनुसार व्यक्ति समाज का प्रतिनिधि और प्रमुख साधन है। इस व्यक्ति में एक साथ व्यक्तिगत और सामाजिक भूमिका को साझा करने की क्षमता होनी चाहिए। वह एक एकात्म मानव होना चाहिए।

निष्कर्ष

जहां तक मानववाद की उत्पत्ति का प्रश्न है पश्चिम में यह विशेष रूप से मध्यकाल में चर्च की सत्ता के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया के रूप में आया था। अर्थात पश्चिमी मानववाद नैसर्गिक न होकर प्रतिक्रियावादी है। जबकि भारतीय मानववाद किसी प्रतिक्रिया के फलस्वरूप न उतपन्न होकर एक स्वाभाविक अवधारणा है। पश्चिम में मनुष्य को खण्ड खण्ड में देखने की बजाय भरतीय चिंतन पद्धति मानव को उसकी समग्रता में देखता है। भारतीय मानववाद मुख्य रूप से आध्यात्मिक मानववाद है। इसका मुख्य लक्ष्य मनुष्य का विकास उसकी पूर्णता में करना है। एक एकात्म मानव का निर्माण ही इसका उद्देश्य है।

सन्दर्भ–सूची

1. Corliss Lamont] The Philosophy of Humanism] Vision press Limited] London] 1962] p-12-
2. नवल किशोर, मानववाद और साहित्य, शुभदा प्रकाशन, दिल्ली, 1972.
3. Jean Paul Sartre] EÛistentialism is a Humanism] Methuen publishing limited] 1948-
4. प्रभा खेतान, सार्त्रःशब्दों का मसीहा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2021.
5. Swami Vivekananda] C-W-
6. Shashi Tharoor] Why I am a Hindu] Allef Book Company] New Delhi] 2018-
7. ईशावास्योपनिषद.
8. Swami Vivekananda] What is Religion-
9. Dr- Peter D- Zarina] Fundamentals of Buddhism-
10. Bhattacharya] The Indian Philosophical Systems: Their basic unity and relevance today- Paper of a seminar held at the Ramakrishna Mission Institute of Culture on 3 feb] 1990-
11. M-N- Roy] The New Humanism] Classical Publication] Calcutta] 1947-
12. Deendayal Upadhyaya] Integral Humanism] Mumbai] 1965-